विचार बिन्दु

अधिकार जताने से अधिकार सिद्ध नहीं होता। –टैगोर

संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा में हिन्दी वालों का भविष्य

संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) की 2021 की सिविल सेवा परीक्षा के इस बार के नतीजों ने एक बार फिर इसमें हिन्दी माध्यम के अभ्यर्थियों के सफल होने के अवसर का मुद्दा उठा दिया है। इस साल 685 उम्मीदवार सफल हुए हैं जिसमें राजस्थान के रवि कुमार सिहाग 18वीं रैंक के साथ इस बार हिंदी मीडियम से परीक्षा देने वालों में टॉपर बन कर इस मुद्दे को ऊपर ले आये हैं। 22वीं रैंक लाने वाले सुनील कुमार धनवंता हिंदी मीडियम के दूसरे टॉपर हैं। तो क्या इस परीक्षा में अपना स्थान हासिल करने लगी है यह सवाल उचित ही है। सात साल के बाद हिंदी माध्यम का कोई छात्र यूपीएससी पास करने वाले शीर्ष 25 उम्मीदवारों में जगह बना पाया है। इससे पहले सिविल सेवा की 2014 की परीक्षा में निशांत कुमार जैन 13वें स्थान पर रहे थे। पूछा जा सकता है कि क्या यूपीएससी पैटर्न में 2013 में हुए बदलाव के बाद, हिंदी माध्यम में परीक्षा देने वालों के लिए यह बेहतरीन प्रदर्शन है? केवल टॉप 25 में हिंदी मीडियम के दो सफल उम्मीदवारों को देखकर अभी से इस बात का अंदाज़ा लगाना मुश्किल है कि इस बार के नतीजे हिंदी मीडियम वालों के लिए पिछले 9 सालों में सबसे बेहतर हैं या नहीं। यूपीएससी इस बात की जानकारी नहीं देती कि सफल उम्मीदवारों ने किस मीडियम में परीक्षा दी थी, इसलिए इस प्रश्न का सीधा-सटीक उत्तर मिलना भी संभव नहीं है। किन्तु हिंदी मीडियम में यूपीएससी परीक्षा देने वालों की संख्या का अंदाज़ा यूपीएससी की वार्षिक रिपोर्ट और लाल बहादुर शास्त्री नेशनल एकेडमी ऑफ़ एडमिनिस्ट्रेशन के आंकड़ों से मिलता है। कोचिंग संस्थानों के सर्वे से भी इन आंकड़ों की सच्चाई का एक अनुमान जरूर मिल जाता है,

देश की शासन व्यवस्था चलाने के लिए ब्यूरोक्रेसी की क़रीब 50 सेवाएं हैं। इनमें से लगभग आधे यानी 24 के लिए चयन सिविल सेवा परीक्षा के ज़रिए ही होता है। इस परीक्षा के ज़रिए तीन अखिल भारतीय सेवाओं में से दो यानी आईएएस और आईपीएस का चयन किया जाता है। वहीं भारतीय राजस्व सेवा (इनकम टैक्स), भारतीय राजस्व सेवा (कस्टम एंड एक्साइज़ ड्यूटी), भारतीय रेल की चार सेवाओं सहित कुल 22 केंद्रीय सेवाओं के लिए अफ़सरों का चयन इसी परीक्षा से होता है।

इस बार ऐसा जरूर लग रहा है कि यूपीएससी के परिणाम, बदलाव के बाद के सालों में बेहतर है। लेकिन यह अपवाद भी हो सकता है, क्योंकि 2020 और 2021 में तो हिंदी मीडियम का एक भी अभ्यर्थी टॉप 100 में नहीं था और उसके पहले के तीन चार सालों के हालात भी ऐसे ही थे। मेन्स का सिलेबस बदलने के पहले, टॉप 100 में हिंदी के 10-12 अभ्यर्थी होते थे। लेकिन नए सिलेबस पर 2013 में परीक्षा होने के बाद 2014 में जब परिणाम आया तो हिंदी मीडियम का जनरल कैटेगरी से एक भी कैंडिडेट आईएएस नहीं बन सका। उस बार हिंदी मीडियम का टॉपर 107 रैंक का था जबकि कुल सिलेक्शन क़रीब 25 ही लोगों का हुआ। हालांकि 2014 की परीक्षा में हिंदी मीडियम के प्रदर्शन में सुधार दिखा और क़रीब पाँच प्रतिशत अभ्यर्थी इसमें सफल हुए। उस साल हिंदी मीडियम के टॉपर की रैंक 13वीं थी।

लाल बहादुर शास्त्री नेशनल एकेडमी ऑफ़ एडमिनिस्ट्रेशन की वेबसाइट पर मौजूद आंकड़ों के अनुसार, 2015 और 2016 की परीक्षा में हिंदी मीडियम वालों की सफलता दर लगभग चार-पांच प्रतिशत रही, लेकिन 2017 और 2018 की परीक्षा में ये आंकड़ा फिर से दो-तीन प्रतिशत के बीच पहुंच गया। 2017 की परीक्षा के जो नतीज़े 2018 में आए उनमें हिंदी मीडियम का टॉप रैंक 337 रहा। इस वजह से सामान्य श्रेणी के तहत हिंदी मीडियम से परीक्षा देने वाला एक भी कैंडिडेट आईएएस, आईपीएस या आईआरएस अधिकारी नहीं बन सका। वेबसाइट पर 2019 और 2020 के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। यूपीएससी की वार्षिक रिपोर्ट में मेन्स लिखने वालों के आंकड़ों को देखकर पता चलता है कि 2015 के बाद से हिंदी मीडियम से परीक्षा देने वालों का जो आंकड़ा गिर रहा है, वह 2019 और 2020 में भी गिरता गया है। साल 2015 में हिंदी मीडियम से परीक्षा देने वालों की संख्या 2,439 थी जो 2019 में घटकर 571 और 2020 में 486 रह गई। इस साल हिंदी मीडियम से परीक्षा पास करने वालों का सटीक आंकड़ा मिलना फ़िलहाल संभव नहीं है। जानकार लोग उम्मीद जता रहे हैं कि इस बार 50 से 60 लोग हिंदी मीडियम से चयनित हुए होंगे लेकिन ये भी पैटर्न में बदलाव से पहले की तुलना में कम है।

हिंदी में परीक्षा देने वालों का ख़राब प्रदर्शन देश की शिक्षा व्यवस्था, अंग्रेज़ी को लेकर सरकारों की नीति, और देवनागरी लिपि को लिखने में अंग्रेज़ी की तुलना में ज़्यादा वक़्त लगने आदि को भी माना जाता है। भाषा का संस्कृति के साथ संबंध गहरा संबंध होता है।

2010 में खन्ना समिति की सिफ़ारिश के बाद 2011 से प्रारम्भिक परीक्षा का पुराना पैटर्न बदलकर दूसरे पेपर के रूप में सिविल सेवा योग्यता परीक्षा को लाया गया जिसे लेकर पूरे काफ़ी विरोध और विवाद हुआ। 2014 में तो इसके ख़िलाफ़ जमकर विरोध प्रदर्शन होने के बाद यूपीएससी ने बासवान समिति बनाई, जिसकी रिपोर्ट आने के बाद 2015 से इसे क्वालिफाईंग बना दिया गया। प्रारम्भिक (प्रिलिमिनरी) के इस पेपर में अब किसी अभ्यर्थी को कुल 200 अंकों में से केवल 66 अंक ही लाने होते हैं। इसके बावजूद अब भी कई लोग इसे पूरी तरह हटाए जाने की मांग कर रहे हैं। यूपीएससी ने पीटी का पैटर्न बदलने के दो साल बाद यानी 2013 में मेन्स के पैटर्न और सिलेबस को भी बदल दिया। इस बदलाव की ख़ासियत यह रही कि इसमें चुने जा सकने वाले वैकल्पिक विषय को दो (चार पेपर) से घटाकर एक (दो पेपर) कर दिया गया। इसके साथ ही, सामान्य अध्ययन के पेपरों को दो से बढ़ाकर चार कर दिया गया। निबंध और दो अनिवार्य भाषाओं के कुल तीन पेपर पहले की ही तरह बने रहे। इस बारे में सबकी राय एक जैसी नहीं है। किसी के अनुसार यह यूपीएससी की नीति और परीक्षा पैटर्न के चलते हुआ है, तो कोई इसे छात्रों की विफलता क़रार देते हैं। कुछ ऐसे भी हैं जो इसके लिए सरकार की नाकामी और देश के सिस्टम की विफलता को ज़िम्मेदार मानते हैं।

बहुत से लोग यूपीएससी में हिंदी मीडियम के ख़राब प्रदर्शन की वज़ह अंठोज़ी के बढ़ते दबदबे को मानते हैं। उनका कहना है कि, प्रशासन में बैठे कुलीन लोग शिक्षा और भाषा को लेकर चुप्पी साधे हुए हैं। उनकी यह चुप्पी बताती है कि अंग्रेज़ी के दबदबे को बढ़ाने में उनकी सहमति है। तो दूसरी तरफ यह भी कहा जा रहा है कि आज के दौर में जब किसी अधिकारी से अपेक्षा की जाती है कि वह दुनिया को जाने और उनसे इन्टरैक्ट करें तो इसके लिए अंग्रेज़ी जानना तो ज़रूरी होगा ही। छात्रों को इन बातों में ज़्यादा वक़्त गंवाने के बजाय अंग्रेज़ी पर काम करने पर लगाना चाहिए। वहीं इस बार की परीक्षा में चयनित एक अभ्यर्थी का कहना है कि असल समस्या अंग्रेज़ी नहीं हिंदी है। वर्ष 2011 में सी सेट आने से पहले क़रीब चार से पांच हज़ार छात्र हिंदी मीडियम से मेन्स की परीक्षा देते थे, लेकिन 2015 में सी सेट की परीक्षा से अंग्रेज़ी के हटने के बाद भी यह आंकड़ा घटकर केवल पांच से छह सौ रह गया है। इसकी वजह अंग्रेज़ी नहीं हिंदी का ख़राब और मशीनी अनुवाद है। जैसे एक दो साल पहले सिविल डिस ओबिडिएंस मूवमेंट का अनुवाद असहयोग आंदोलन किया गया था। इंप्लीकेशन का अनुवाद उलझन, लैंड रिफ़ॉर्म का अनुवाद आर्थिक सुधार किया गया था। दिक्कत यह है कि निर्देश में लिखा होता है कि किसी ग़लती की सूरत में अंग्रेज़ी टेक्स्ट ही मान्य होगा। यूपीएससी ऐसा कहकर अपनी ज़िम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेती है।

यह भी दावा किया जा रहा है कि जब से सी सेट और मेन्स का नया पैटर्न आया है तब से मानविकी और कला के साथ-साथ ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के लिए इस परीक्षा में आगे बढ़ना मुश्किल हो गया है। सीसेट यह कहकर लाया गया था कि इससे सभी पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए एक समान स्तर तैयार हो सकेगा, पर हुआ इसका ठीक उल्टा। 2011 के पहले की तुलना में अब केवल 10 फ़ीसदी हिंदी मीडियम के विद्यार्थी ही पीटी क्वालिफ़ाई कर पा रहे हैं। मेन्स के सिलेबस मटीरियल की कमी 2015 या 2016 तक समस्या की वजह बनी, लेकिन पीटी की समस्या अब भी बनी हुई है। आंकड़े भी इसकी गवाही देते हैं। पैराग्राफ़ के जटिल अनुवाद, गणित और रीज़निंग के चलते जो इन चीज़ों में सहज नहीं हैं, उनके लिए सी सेट का पेपर क्वालिफ़ाइंग होते हुए भी आसान नहीं रह गया है। जानकारों का कहना ह। आई कि यदि पीटी पास करने वालों की संख्या बढ़ेगी तो हिंदी मीडियम का प्रदर्शन भी सुधर जाएगा।

हिंदी में परीक्षा देने वालों का ख़राब प्रदर्शन देश की शिक्षा व्यवस्था, अंग्रेज़ी को लेकर सरकारों की नीति, और देवनागरी लिपि को लिखने में अंग्रेज़ी की तुलना में ज़्यादा वक़्त लगने आदि को भी माना जाता है। भाषा का न केवल संस्कृति के साथ संबंध गहरा संबंध होता है, बल्कि वह व्यक्ति की आर्थिक हैसियत से भी गहराई से जुड़ी होती है। इसी से तकनीक की उपलब्धता भी तय होती है। इसके लिए सरकार को सहानुभूति वाला रवैया अपनाकर अनुकूल रुख़ अपनाना होगा,क्योंकि हर जाति और धर्म की तरह हर भाषा में प्रतिभा समान रूप से पाई जाती है। हमें उन पर भरोसा करके सही नीति के ज़रिए उनका विकास करना होगा, नहीं तो अंगेज़ी की ज़रूरत बताते-बताते एक दिन हमारी भाषा इतनी पिछड़ जाएगी और वैश्वीकरण के चक्कर में हम अपनी भाषा के साथ संस्कृति से भी विमुख हो जाएंगे।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

दर्पण कोशिकाएँ - मन दर्पण -2

इमिटेशन कोशिकाएँ : कुछ दिनों का अबोध नवजात शिशु। आपकी ओर देख रहा है। आप उसे जीभ निकाल कर चिढायें। प्रतिक्रिया में शिशु भी जीभ निकाल देता है। यह कैसे हुआ? उसने जीभ निकालना कब सीखा? जीभ निकालते देखा और जीभ निकाल दी। यह सब दर्पण कोशिकाओं से संभव हुआ। दर्पण कोशिकाओं में दृश्य अनुरूप मांस-पेशियों को उद्वेलित करने की क्षमता जन्मजात होती है जो और विकसित होती रहती है। आवाज सुन कर उसी अनुरूप स्वर-यंत्र की मांस-पेशियों को उद्वेलित करने की क्षमता का आधार भी यही है। देख-सुन कर बोलना सीखने का यही आधार है। बड़ी उम्र में बहरा हुआ व्यक्ति आपके होठों के हिलने और हाव-भाव से बोली समझ लेता है, जवाब देता है। बढ़ई अपने पिता को काम करते हुए देख कर काष्ठ कला में क्षमता और दक्षता हासिल कर लेता है। यह सब दर्पण कोशिकाओं का कमाल है। भाषा सीखने - लेंगवेज लर्निंग - में दर्पण कोशिकाओं की प्रमुख भूमिका होती है। भाव और भाषा द्वारा बहुआयामी संप्रेषण की आधार कोशिकाएँ दर्पण कोशिकाएँ होती हैं।

हाव-भाव, बाडी लेंग्वेज व एक्शन अन्डरस्टेंडिग : प्रयोगों से यह ज्ञात हुआ है कि दर्पण कोशिकाओं में चेहरे के हाव-भाव और शरीर की भंगिमा को देख, उनका विश्लेषण कर, उनके पीछे उस व्यक्ति का सोच क्या है, यह समझने की क्षमता होती है। एक व्यक्ति टेबल पर रखे पानी के गिलास को उठाने के लिए हाथ बढ़ा रहा है। सामने वाले व्यक्ति के मस्तिष्क में दृश्य अंकित हो रहा है। दर्पण कोशिकाएँ लक्ष्यपरक कर्म के पीछे के सोच को समझने की क्षमता रखती हैं। आँखें बोलती हैं, मन के भाव वहाँ प्रतिलक्षित होते हैं, चेहरे के भाव, शरीर की हर जुम्बिश, भंगिमा, मन के भाव बोलते हैं। सामने वाले की दर्पण कोशिकाओं में सब प्रतिबिम्बित होता है- क्रियाएँ, कर्म, संवेग और सोच। आपका मन (दर्पण कोशिकाएँ) सामने वाले के मन (दर्पण कोशिकाओं) का दर्पण होता है। हर कर्म में नियत सोच, विचार की चेतना, अनुभूति और स्मृति।

विचार और मांस-पेशियों का एक्शन पोटेन्शियल : किसी कर्म के पीछे विचार और आशय को समझने की विलक्षण क्षमता दर्पण कोशिकाओं में होती है। सामने वाले व्यक्ति ने दोनों मुट्ठियाँ बंद कर हाथ बाक्सर की मुद्रा में उठा लिए हैं, गुस्सैल नजरों से घूर रहा है। आपकी दर्पण कोशिकाएँ प्रतिबिम्ब का आशय भांप जाती है कि सामने वाला आक्रमण करने वाला है। बचाव में आपको भागना है या मुकाबला करना है। और उसी के अनुरूप मांसपेशियों को तैयार रहने की सूचना भेजनी है। प्रयोग से मालूम हुआ कि विचार के अनुरूप प्रायोजित मांसपेशियों में उत्तेजना बढ़ जाती है, वे कार्य करने को तत्पर हो जाती हैं। यह तत्परता इलेक्ट्रिक एक्टिविटि - एक्शन पोटेंशियल - के रूप में मांस-पेशियों में मापी जा सकती है। दर्पण कोशिकाओं

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

में बिम्ब और सामने वाले की मांस-पेशियों से जनित बॉडी लेंग्वेज के अनुरूप आपकी मांस-पेशियों में प्रतिक्रियात्मक तैयारी हो जाती है। ये कोशिकाएँ सामने वाले के हाव, भाव, भंगिमा का बड़ा सूक्ष्म विश्लेषण करती हैं।

आँखें बोलती हैं : एक प्रयोगकर्ता ने बंदर को अक्षर ज्ञान सिखाया। वे बंदर को अक्षर का नाम बोलते, उसकी ओर इशारा कर अक्षर पहचानवाते, फिर अक्षर का नाम बोल उसे हाथ से उठाने को कहते। सही अक्षर उठाने पर उसे उसकी प्रिय चीज इनाम के रूप में खाने को देते। बंदर अंग्रेजी वर्णमाला के सभी अक्षर पहचानने लगा। प्रयोगकर्ता बड़े फख से इसको दिखाते। एक बार जब वे ऐसा करने को आये तो उन्होंने काला चश्मा पहन रखा था। अक्षर का नाम बोल कर उसे उठाने को कहा। बंदर उनकी ओर ताकता रहा, उसने अक्षर नहीं उठाया। बार-बार कहने, फुसलाने, डाटने पर भी नहीं। तब चश्मा उतार कर उन्होंने बंदर से आँख मिलाई और आँख के इशारे से बोला गया अक्षर उठाने को कहा। बंदर ने तुरंत वह अक्षर पहचान लिया। चश्मा उतारे जितनी बार उन्होंने अक्षर पहचानवाया, बंदर ने पहचाना। लेकिन जैसे ही प्रयोगकर्ता ने वापस चश्मा पहन कर ऐसा किया, बंदर अक्षर नहीं पहचान पाया। जाहिर था कि बंदर आँखों के सूक्ष्म इशारे के अपने मस्तिष्क में बने प्रतिबिंब का आशय पहचान कर ऐसा कर रहा था। उसकी दर्पण कोशिकाएँ प्रयोगकर्ता के आँखों के बोल सुन और समझ रही थीं।

सामाजिक सरोकार, सभ्यता, संस्कृति : मनुष्यों में सामाजिक सरोकार की जनक दर्पण कोशिकाएँ ही हैं। बाहरी जगत से सतत समग्र संवाद का माध्यम ये कोशिकाऐं हैं। भाषा और बोली का विकास इन्हीं से संभव हुआ है। भावानुभूति और भावाभिव्यक्ति का आधार इन्हीं से है। दर्शन का उद्गम ये कोशिकाएँ ही हैं। ओटिज्म, जिसका प्रमुख लक्षण बच्चे में सामाजिक सरोकार और सम्बन्ध बनाने में कमी होती है, दर्पण कोशिकाओं में दोष के. कारण होती है।

सेल्फ इमेज : ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त सतत संवेगों के समन्वय से स्वयं के शरीर का मानसिक चित्र दायें कोर्टेक्स के अग्र भाग में बनता है। वहाँ स्थित दर्पण कोशिकाएँ इस स्वचित्र के निर्माण और इसके बाहरी जगत से संवाद और सरोकार में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। बाहरी जगत से बहुआयामी संवाद का केन्द्र-बिन्दु ये ही होती हैं। किसी भी प्राणी का अस्तित्व सर्वथा स्वतंत्र नहीं होता। अपनी सेल्फ इमेज के आधार पर प्राणी सदा अपने परिवेश से सतत संवाद कर जुड़ा रहता है। इस बहुआयामी सतत संवाद से ही जीवन संभव है।

ट्रांसक्रेनियल मेग्नेटिक स्टिमुलेशन : इस विधि में एक उपकरण द्वारा चुम्बकीय तरंगे उत्पन्न की जाती हैं। ये तरंगे बिजली के करंट जैसे खोपड़ी की हड्डी के पार जा कर मस्तिष्क को प्रभावित कर सकती हैं। उपकरण को खोपड़ी पर उचित जगह रख वहां अन्दर स्थित मस्तिष्क के चिन्हित भाग को उद्वेलित या क्रियाशून्य किया जाता है। प्रयोगकर्ताओं ने मनुष्य में चिन्हित दर्पण कोशिकाओं को उद्वेलित या क्रियाशून्य कर उसका असर देखा।

क्रियाशून्य हुई दर्पण कोशिकाओं से सम्बंधित लक्ष्य परक कर्म के पीछे विचारों को आंकने और उसके अनुरूप आचार, व्यवहार और समाजिक सरोकार में कमी मिली। इस प्रकार दर्पण कोशिकाओं के चिन्हित समूह की कार्यक्षमता को पहचाना गया। अब इस विधि से मस्तिष्क के चिन्हित भागों को प्रभावित कर मानसिक रोगों का उपचार किया जाता है, विशेषकर उनका जो दवाओं से ठीक नहीं होते या ठीक नहीं हो सकते।

डॉ. श्रीगोपाल काबरा
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

बीछवाल में बायोलॉजिकल पार्क के पास ही 25 हैक्टेयर में बनेगा बॉटैनिकल गार्डन

- **शहर का बायोलॉजिकल पार्क टूरिज्म सेंटर होगा**

बीकानेर, (कासं)। जल्दी ही बीकानेर की जनता को बीछवाल में 25 हैक्टेयर में तैयार बॉटनिकल गार्डन मिलेगा जो रमणीय स्थल होने के साथ ही राजस्थान की जलवायु वाले पेड़-पौधों की जानकारी भी देगा। इस पर पांच करोड़ रुपए खर्च होंगे। बीकानेर में वन विभाग बॉटनिकल गार्डन बना रहा है। इसके लिए बीछवाल में बायोलॉजिक पार्क के पास 25 हैक्टेयर जमीन चिह्नित कर ली गई है। इसमें राजस्थान की जलवायु में पनपने वाले अलग-अलग प्रजाति के पौधे लगाए जाएंगे।

ये पौधे ब्लॉक बनाकर आकर्षक तरीके से लगाए जाएंगे और उनके बारे में जानकारी भी अंकित की जाएगी । वन विभाग गार्डन को टूरिज्म से जोड़ेगा। उसे रमणीय बनाया जाएगा जिससे कि स्थानीय लोगों के साथ-साथ बाहर से आने वाले लोग भी वहां पहुंचकर जानकारी हासिल कर सके। जल्दी ही बॉटनिकल पार्क की डीपीआर तैयार की जाएगी। चिह्नित जमीन का सर्वे कर तय किया जाएगा कि कुल कितने पौधे लगेंगे और उनके बीच की दूरी क्या होगी। बबूल, पलाश, खेजड़ी, अमलताश, बोरड़ी, कैर, जाल, रोहिड़ा, गोरख इमली, झरबेला, फोग, नीम, ऐलोविरा, कुमटा। इनके अलावा औषधीय पौधे कंटकारी, पीली कंटीली, अश्वगंधा। प्रायोगिक तौर पर शहतूत व अन्य पौधे भी लगाए जाएंगे। शहर के नजदीक बीछवाल में वन विभाग के पास खासी जमीन है। वहीं बायोलॉजिकल पार्क भी तैयार किया जा रहा है जो बीकानेर शहर में टूरिज्म सेंटर होगा। इसे देखते हुए बॉटनिकल पार्क भी बायोलॉजिक पार्क के पास ही बनाने का फैसला किया गया है जिससे कि पर्यटन को बढ़ावा मिले।

नवजात का शव कचरे में फेंका

जोधपुर, (कासं)। शहर के न्यू पावर हाउस रोड स्थित इंद्रा गांधी पार्क के पास में बने डंपिंग स्टेशन पर आज सुबह स्कूटी पर सवार होहर आई महिलाओं ने एक नवजात का शव कचरे में फेंका और भाग निकली। सूचना मिलने पर पुलिस भी घटनास्थल पर पहुंची और नवजात के शव को बरामद कर अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया। नवजात कन्या होना बताया गया है।

सेक्टर 4 एफ के नजदीक कचरा बीनने वाली एक लडकी ने क्षेत्र के लोगों को बताया कि एक स्कूटी पर सवार होकर आई दो महिलाएं एक प्लास्टिक के कट्टे में कोई चीज कचरा पात्र में फैंक कर गई है। थोड़ी देर बाद लड़की ने बताया कि इसमें एक बच्ची है। इससे लोग चौंक उठे।

सूचना मिलने पर वार्ड नंबर 49 दक्षिण के पार्षद दौलतसिंह भी मौके पर पहुंचे। आशंका है कि नवजात कन्या के शव को अवैध पैदाइश छुपाने के इरादे से डाला गया। क्षेत्र में आस पास लगे सीसीटीवी फुटेज से स्कूटी सवार महिलाओं के बारे में पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सिरस में 3 माह से चिकित्सक का पद रिक्त

- **कंपाउंडर का भी हुआ ट्रांसफर, एएनएम का पद पहले से ही है रिक्त**
- **मरीजों को हो रही है परेशानी**

निवाई, (निसं)। राजकीय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सिरस में चिकित्सक व एएनएम का पद रिक्त होने से मरीजों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है।

सरपंच शिवजीराम जाट, ताराचंद चौधरी, रमेश गोस्वामी, लक्ष्मण सिंह चौहान, गिरधर सिंह व नेमीचंद जैन सहित अन्य लोगों ने बताया कि चिकित्सा विभाग की अनदेखी के चलते स्वास्थ्य केन्द्र पर असुविधा बनी हुई है।

उन्होंने बताया कि प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में नियुक्त चिकित्सक का स्थानांतरण हो जाने के 3 महीने बाद भी दूसरा चिकित्सक नहीं लगाया गया है। इसकी वजह से मरीजों को टोंक या निवाई जाना पड़ता है। वर्तमान में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र एक कंपाउंडर के भरोसे ही चल रहा है।

ग्रामीणों ने बताया कि चिकित्सा विभाग द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र पर चिकित्सक लगाने के बजाय कार्यरत कम्पाउण्डर का ट्रांसफर भी करने के आदेश कर दिए हैं जिससे ग्रामीणों में रोष व्याप्त हो गया है। स्वास्थ्य केन्द्र में एएनएम का पद भी काफी समय से रिक्त चल रहा है जिसकी वजह से प्रसव पीड़ित महिलाओं को दूर-दराज में अन्यत्र ले जाना पड़ता है जिससे भारी परेशानी उठानी पड़ रही है।

सरपंच शिवजीराम जाट सहित ग्रामीणों ने मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी टोंक से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सिरस पर चिकित्सक व पूरा स्टाफ लगाने की मांग की है।

भारत के सभी धर्मों में आदिकाल से रहा है योग का महत्व

भारत की सांस्कृतिक विरासत योग को अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर मनाने के लिए 27 सितम्बर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के 69 वें सत्र को संबोधित करते हुए भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विश्व समुदाय से आव्हान किया। 11 दिसम्बर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा के 177 सह-समर्थक देशों के साथ 21 जून को "अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस" मनाने का संकल्प सर्वसम्मति से अनुमोदित किया जाए ।

प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस : प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का 21 जून, 2015 को राजपथ नई दिल्ली में सफल आयोजन किया। जिसमें दो गिनीज विश्व रिकॉर्ड बने प्रथम 35,985 प्रतिभागियों के साथ सबसे बड़ा योग सत्र तथा दूसरा अभ्यास सत्र में 84 देशों के नागरिकों की प्रतिभागिता का होना। इसी श्रृंखला में "सम्पूर्ण स्वास्थ्य के लिए योग" विषय पर दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई जिसमें भारत तथा विदेश से लगभग 1300 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

योग का संक्षिप्त इतिहास - श्रुति परम्परा के अनुसार भगवान शिव योग विद्या के प्रथम आदि गुरू या आदियोगी हैं। हजारों वर्ष पूर्व हिमालय में कांति सरोवर झील के किनारे आदियोगी ने योग का गूढ़ ज्ञान पौराणिक सप्त ऋषियों को दिया था।

सिंधु, सरस्वती घाटी सभ्यता में योग साधाना करती अनेक आकृतियों के साथ प्राप्त ढ़ेरों मुहरें एवं जीवाश्म अवशेष इस बात के प्रमाण है कि प्राचीन भारत में योग का अस्तित्व था। वैदिक एवं उपनिषद परम्परा, शैव, वैष्णव तथा तांत्रिक परम्परा, भारतीय दर्शन, रामायण एवं श्रीमद् भगवत गीता समेत महाभारत जैसे महाकाव्यों, बौद्ध एवं जैन परम्परा के साथ-साथ विश्व की लोक विरासत में भी योग मिलता है। महर्षि पतंजलि ने उस समय के प्रचलित प्राचीन योग अभ्यासों को व्यवस्थित व वर्गीकृत किया और उनके निहितार्थ और इससे संबंधित ज्ञान को पांतजलीयोगसूत्र नामक ग्रन्थ में क्रमबद्ध तरीके से व्यवस्थित किया।

सनातन धर्म में योग दर्षन : योग शब्द का अर्थ समाधि अर्थात चित्त की वृतियों का निरोध है। योग की प्रमुख चार पद्धितयां सनातन धर्म में प्रचलित रही हैं ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग एवं राजयोग। गीता में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कर्म योग एवं ज्ञान योग के बारे में संदेष दिया है। इसी प्रकार हठयोग में ह का अर्थ सूर्य अर्थात पिंगला नाडी एवं ठ का अर्थ चन्द्र अर्थात सुषुम्ना नाडी

हरिओमसिंह गुर्जर

या स्वरों का मिलन से है।

महर्षि पतंजलि ने चित्त की वृत्तियों को पांच भागों में विभक्त किया है। प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा और स्मृति। इन पांचों प्रकार की क्लिष्टि और अक्लिष्ट वृत्तियों को रोक देना ही योग है। महर्षि पतंजलि का अष्टांग योग सार्वभौमिक, सार्वदेषिक, सार्वकालिक, प्रमाणिक व वैज्ञानिक माना जाता है। इसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि प्रमुख है।

स्वामी विवेकानन्द का भक्ति योग, महर्षि अरविन्द के दर्शन में सम्पूर्ण जीवन योग हैं और सम्पूर्ण मानवीय क्रियाऐं योग है। वर्तमान में स्वामी रामदेव द्वारा पतंजलि योगपीठ के माध्यम से भारतीय जनमानस तक योग के महत्व को साकार किया जा रहा है।

बौद्ध योग दर्षन : ध्यान बौद्ध साधना का हृदय है। बौद्ध परम्परा के अनुसार अकुशल चित्त के कारण ही साधक को संसार भ्रमण करना पड़ता है। इसलिए चित्त को स्थिर करने के लिये ही ध्यान की आवश्यक हैं। अर्थात् किसी एक पवित्र विषय पर चित्त स्थिर करना ही ध्यान है।

बौद्ध योग की भारत में प्रचलित ध्यान प्रणाली विपष्यना हैं। विपष्यना के लिए तीन शर्तें हैं जिनमें अनित्य का ज्ञान, दुख: का ज्ञान, और अनात्म का ज्ञान होने पर ही विपष्यना प्रगट होती है। विपष्यना में मौन का कड़ाई से पालन कराया जाता है।

जैन योग दर्षन : भगवान महावीर के सैकड़ों शिष्य केवलज्ञानी, अवधिज्ञानी और मन: पर्ययज्ञानी थे। जैन योग में चार युग देखने को मिलते हैं ध्यान योग, शास्त्रीय ज्ञान और मंत्र योग, उसके बाद तंत्र, मंत्र एवं हठ योग तथा उसके बाद प्रेक्षाध्यान योग का अभ्युदय हुआ। प्रेक्षा ध्यान में कायोत्सर्ग, श्वास प्रेक्षा, शरीर लेक्षा, चैतन्य केन्द्र प्रेक्षा और लेष्या ध्यान प्रमुख योग पद्धितयां है।

आर्चाय श्रमाश्रमण ने वि.सं. छठी शताब्दी में ध्यान शतक की रचना की, कुन्दकुन्द, जिनभद्रगणि श्रमाश्रमण और पूज्यपाद के ग्रन्थों में ध्यान की मौलिक पद्धित सुरक्षित है। आचार्य हरिभद्र ने विक्रम आठवीं शताब्दी में महर्षि पतंजलि के योगदर्शन की पद्धति को जैन साधना पद्धित के साथ जोड़ा। 'नमस्कार महामंत्र कल्प', 'पद्मावती कल्प', 'भैरव कल्प', 'शत्रु जय कल्प' आदि अनेक कल्पों एवं जप विधियों का निर्माण हुआ। शुभचन्द ने 'ज्ञानार्णव' और आचार्य हेमचन्द्र के 'योगशास्त्र' की रचना की। आचार्य रत्नशेखर ने गुणस्थान क्रमारोह लिखा।

विक्रम की बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आचार्यश्री तुलसी ने विलुप्त जैन योग परम्परा को पुर्नजीवित कर संस्कृत की सूत्रात्मक शैली में 'मनोनुशासनमृ' नामक ग्रन्थ लिखा।

इस प्रकार भारतीय दर्षन में योग का महत्व आदि काल से रहा है तथा सनातन, जैन, बौद्ध परम्पराओं द्वारा इसे उत्कृष्टता प्रदान की जाती रही है।

हरिओमसिंह गुर्जर,
उप निदेषक जनसम्पर्क
विभाग कोटा

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 22 जून, 2022

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, रेवती नक्षत्र गुरूवार प्रात: 6:14 तक, शोभन योग रात्रि 4:56 तक, तैतिल करण प्रात: 5:38 तक, चन्द्रमा मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मीन, मंगल-मीन, बुध-वृष, गुरू-मीन, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज से राष्ट्रीय आषाढ मास आरम्भ होगा। आज पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:03 तक, शुभ 10:46 से 12:29 तक, चर 3:54 से 5:37 तक, लाभ 5:37 से सूर्योदय तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:19

मेष
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

वृष
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी और कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। परिवार में सुख-सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है।

कर्क
धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है और शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सुसंदेश प्राप्त होंगे